

# भारत में शिक्षा दर्शन की आलोचनात्मक समीक्षा

अंशिका सिंह<sup>1\*</sup>, डॉ. विनीता त्यागी<sup>2</sup>

1 शोधार्थी, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

ouriginal.sku@gmail.com

2 सह – प्राध्यापक, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर, म.प्र., भारत

**सार:** भारत में एजुकेशनल फिलॉसफी एक लंबी, मुश्किल बौद्धिक यात्रा से विकसित हुई है, जिसे पुराने ज्ञान, आध्यात्मिक परंपराओं, कॉलोनिअल असर और आज की ग्लोबल सोच ने आकार दिया है। यह रिव्यू पुराने, मिडिल एज, मॉडर्न और पोस्ट-मॉडर्न दौर के फिलॉसफी विचारों के विकास की जांच करता है और एनालाइज़ करता है कि इन बदलावों ने एजुकेशनल सोच को कैसे प्रभावित किया है। यह एजुकेशनल मकसद, करिकुलम, तरीकों और वैल्यू तय करने में फिलॉसफी की बुनियादी भूमिका पर रोशनी डालता है, और एजुकेशन को कल्चरल और नैतिक आदर्शों पर आधारित एक लगातार चलने वाली सोशल प्रोसेस के तौर पर दिखाता है। यह पेपर भारत में एजुकेशनल फिलॉसफी के क्षेत्र की सीमाओं और मौजूदा चुनौतियों का भी रिव्यू करता है, जिसमें एकेडमिक प्रोग्राम में इसका अलग होना और वेस्टर्न स्कॉलरशिप की तुलना में एनालिटिकल जुड़ाव की कमी शामिल है। मुख्य फिलॉसफी परंपराओं और भारतीय शिक्षा पर उनके असर का आकलन करके, यह रिव्यू इस बात की पूरी समझ देता है कि कैसे फिलॉसफी के नज़रिए ने भारतीय संदर्भ में एजुकेशनल प्रैक्टिस को आकार दिया है, मजबूत किया है और कभी-कभी रोका भी है। कुल मिलाकर, यह स्टडी एक ज़्यादा सोचने वाला, बराबर और पूरी तरह से सोचने वाला एजुकेशनल सिस्टम बनाने के लिए मॉडर्न एजुकेशनल ज़रूरतों के साथ फिलॉसफी की जांच को जोड़ने की अहमियत पर ज़ोर देती है।

**मुख्य शब्द:** एजुकेशनल फिलॉसफी, पोस्ट-मॉडर्न, वेस्टर्न स्कॉलरशिप, नैतिक आदर्शों

## 1. परिचय

फिलॉसफी ज्ञान का एक बड़ा फील्ड है जिसमें ज्ञान की परिभाषा ही उन सब्जेक्ट्स में से एक है जिनकी जांच की जाती है। यह यूनिवर्स, मन और शरीर के नेचर; इन सबके बीच और लोगों के बीच के रिश्तों को कवर करता है। फिलॉसफी जांच का एक फील्ड है – ज्ञान की खोज; साइंस का पहले का और पूरा करने वाला, साइंस के बुनियादी मुद्दों को डेवलप करना और उन सवालों पर सोचना जो साइंस के दायरे से बाहर हैं। फिलॉसफी का सार उन बुनियादी विचारों और तरीकों की स्टडी और डेवलपमेंट है जिन्हें फिजिक्स या हिस्ट्री जैसे खास एंपिरिकल सब्जेक्ट्स में ठीक से एड्रेस नहीं किया जाता है। इस तरह, फिलॉसफी वह नींव देती है जिस पर सभी विश्वास स्ट्रक्चर और ज्ञान के फील्ड बने होते हैं। यह धर्म, भाषा, साइंस, कानून, साइकोलॉजी, मैथ और पॉलिटिक्स जैसे अलग-अलग फील्ड्स की डेफिनिशन और थ्योरी को डेवलप करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले अप्रोच के लिए जिम्मेदार है। यह अपने खुद के स्ट्रक्चर

और प्रोसीजर को भी जांचता और डेवलप करता है, और जब यह ऐसा करता है तो इसे मेटाफिलॉसफी कहा जाता है: फिलॉसफी की फिलॉसफी। [1]

'फिलॉसफी' का असली ग्रीक शब्द से मतलब है 'ज्ञान का प्यार'। 'फिलॉसफी क्या है', अपने आप में एक फिलॉसफी का सवाल है। यह फिलॉसफी के नेचर का एक सुराग है। इसका स्कोप बहुत जनरल है; इतना जनरल कि यह, शायद सभी डिसिप्लिन में यूनिवर्सल है, खुद को अपने स्कोप में शामिल करता है। जो बात साफ है वह यह है कि फिलॉसफी, कुछ मायनों में, सोचने के बारे में सोचना है।

## 2. दर्शन का विकास

फिलॉसफी और फिलॉसफर शब्द की शुरुआत ग्रीक विचारक पाइथागोरस से हुई। वेस्टर्न फिलॉसफी के इतिहासकार आमतौर पर इस विषय को कुछ समय में बांटते हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं प्राचीन फिलॉसफी, मध्यकालीन फिलॉसफी और मॉडर्न फिलॉसफी और कंटेम्परेरी फिलॉसफी।

### • प्राचीन फिलॉसफी

प्राचीन फिलॉसफी, 6वीं सदी ईसा पूर्व से 6वीं सदी ईस्वी तक ग्रीक-रोमन दुनिया की फिलॉसफी है। इसे आमतौर पर तीन पीरियड में बांटा जाता है, प्री-सोक्रैटिक पीरियड, प्लेटो और अरस्तू का पीरियड और पोस्ट अरस्तू (हेलेनिस्टिक) पीरियड। इस पीरियड के सबसे महत्वपूर्ण फिलॉसफर प्लेटो और अरस्तू हैं। प्राचीन फिलॉसफी का मुख्य विषय यूनिवर्स के मूल कारणों और सिद्धांतों को समझना है।

प्राकृतिक यूनिवर्स की विविधता और बदलाव को उसके बारे में निश्चित और पक्का ज्ञान पाने की संभावना के साथ मिलाने की एपिस्टेमोलॉजिकल समस्या, उन चीजों के बारे में सवाल जिन्हें इंद्रियों से नहीं समझा जा सकता जैसे नंबर, एलिमेंट, यूनिवर्सल और भगवान। कहा जाता है कि सुकरात ने इंसानों पर ज़्यादा फोकस स्टडी शुरू की, जिसमें तर्क के पैटर्न का एनालिसिस, उसे आगे बढ़ाने के लिए समझ और ज्ञान का महत्व, न्याय के कॉन्सेप्ट की व्याख्या और अलग-अलग सामाजिक पहलुओं से उसका संबंध शामिल है। [2]

## • मिडिवल फ़िलॉसफ़ी

मिडिवल फ़िलॉसफ़ी, मिडिल एज के दौरान वेस्टर्न यूरोप और मिडिल ईस्ट की फ़िलॉसफ़ी है, जो मोटे तौर पर रोमन एम्पायर के क्रिश्चियनाइज़ेशन से लेकर रेनेसां तक फैली हुई है। वेस्टर्न यूरोपियन मिडिवल फ़िलॉसफ़ी का इतिहास ट्रेडिशनली दो मेन पीरियड में बंटा हुआ है। लैटिन वेस्ट का पीरियड, शुरुआती मिडिल एज के बाद से लेकर 12वीं सदी तक, जब अरस्तू और प्लेटो के कामों पर दबाव डाला गया और उन्हें आगे बढ़ाया गया। मिडिल एज के कुछ फ़िलॉसफ़र में क्रिश्चियन फ़िलॉसफ़र ऑगस्टाइन ऑफ़ हिप्पो, थॉमस एक्विनास और दूसरे शामिल हैं।

## • रेनेसां फ़िलॉसफ़ी

रेनेसां, मिडिल एज और मॉडर्न सोच के बीच बदलाव का एक पीरियड था, जिसमें क्लासिकल टेक्स्ट की रिकवरी ने फ़िलॉसफ़िकल इंटरैस्ट को लॉजिक, मेटाफ़िज़िक्स और थियोलॉजी की टेक्निकल स्टडीज़ से हटाकर मोरैलिटी, फ़िलॉसफ़ी और मिस्टिसिज़्म की इलेक्ट्रिक इंक्रायरी की ओर शिफ्ट करने में मदद की। फ़िलॉसफ़ी में नए मूवमेंट यूरोप में बड़े धार्मिक और पॉलिटिकल बदलाव, रिफ़ॉर्मेशन और प्र्यूडलिज़्म के पतन के साथ-साथ डेवलप हुए। नेशन स्टेट में पॉलिटिकल पावर का धीरे-धीरे सेंट्रलाइज़ेशन, निकोल मैकियावेली, थॉमस मोरो, इरास्मस, जीन बोडिन और दूसरों की रचनाओं में सेक्युलर पॉलिटिकल फ़िलॉसफ़ी के आने से झलकता था। [3]

## • आधुनिक दर्शन

समय के हिसाब से, वेस्टर्न फ़िलॉसफ़ी के शुरुआती मॉडर्न युग की पहचान आमतौर पर 17वीं और 18वीं सदी से की जाती है, जिसे अक्सर ज्ञान का युग कहा जाता है। मॉडर्न फ़िलॉसफ़ी अपने पहले के फ़िलॉसफ़ी से इसलिए अलग है क्योंकि यह चर्च, एकेडमिक और अरिस्टोटेलियनिज़्म जैसे पारंपरिक अधिकारियों से ज़्यादा आज़ाद हो गई है, ज्ञान और मेटाफ़िजिकल सिस्टम बनाने की नींव पर नया फोकस हो रहा है और नेचुरल फ़िलॉसफ़ी से मॉडर्न फिजिक्स का उदय हो रहा है। इस समय में फ़िलॉसफ़ी के दूसरे मुख्य विषयों में मन का नेचर और शरीर से उसका रिश्ता, फ्री विल और भगवान जैसे पारंपरिक धार्मिक विषयों के लिए नए नेचुरल साइंस का मतलब और नैतिक और पॉलिटिकल फ़िलॉसफ़ी के लिए एक सेक्युलर आधार का उदय शामिल है। ये ट्रेड्स ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक नए एंपिरिकल प्रोग्राम के लिए फ्रांसिस बेकन के आह्वान में खास तौर पर दिखाई दिए और जल्द ही रेना डेसकार्टेस के मैकेनिकल फिजिक्स और रैशनलिस्ट मेटाफिजिक्स में बहुत प्रभावशाली रूप पाया। थॉमस हॉब्स पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस मेटाडोलॉजी को पॉलिटिकल फिलॉसफ़ी में सिस्टमैटिक तरीके से लागू किया और

वे मॉडर्न पॉलिटिकल फिलॉसफी के ओरिजिनेटर हैं, जिसमें सोशल कॉन्ट्रैक्ट की मॉडर्न थ्योरी भी शामिल है। इस काल के प्रमुख विचारक डेसकार्टेस, स्पिनोजा, लाइबनिज, लोके, बर्कले, ह्यूम और कांट थे।

इनके अलावा गैलीलियो, आइजैक न्यूटन, एडम स्मिथ, जीन जैक्स रूसो ज्ञानोदय के खिलाफ प्रतिक्रिया शुरू करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे। प्रारंभिक आधुनिक काल का अनुमानित अंत अक्सर इमैनुअल कांट के तत्वमीमांसा को सीमित करने, वैज्ञानिक ज्ञान को उचित ठहराने और इन दोनों को नैतिकता और स्वतंत्रता के साथ सामंजस्य स्थापित करने के व्यवस्थित प्रयास के साथ पहचाना जाता है। बाद के आधुनिक दर्शन को आमतौर पर 19वीं शताब्दी की शुरुआत में इमैनुअल कांट के दर्शन के बाद शुरू माना जाता है। जोहान गॉटलिब फिचटे, जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल जैसे जर्मन आदर्शवादियों ने यह मानकर कांट के काम को बदल दिया कि दुनिया एक तर्कसंगत दिमाग जैसी प्रक्रिया से बनी है और इस तरह पूरी तरह से जानने योग्य है। [4]

मिल और कार्ल मार्क्स का मटेरियलिज़्म। दूसरे फिलॉसफर जिन्होंने ऐसी सोच शुरू की जो 20वीं सदी में भी फिलॉसफी को आकार देती रही, उनमें गॉटलोब फ्रेज और हेनरी सिडविक शामिल हैं, जिन्होंने 'लॉजिक और एथिक्स में' एक के बाद एक शुरुआती एनालिटिक फिलॉसफी के लिए टूल्स दिए, चार्ल्स सैंडर्स पीयर्स और विलियम जेम्स ने प्रैग्मैटिज़्म की शुरुआत की। सोरेन कीर्केगार्ड और फ्रेडरिक नीत्शे ने फिलॉसफी के इस फेज में एग्जिस्टेंशियलिज़्म और पोस्ट स्ट्रक्चरलिज़्म के लिए नींव रखी।

## • बीसवीं सदी की फिलॉसफी

पिछली सदी में, फिलॉसफी दूसरे एकेडमिक डिसिप्लिन की तरह यूनिवर्सिटी में प्रैक्टिस किया जाने वाला एक प्रोफेशनल डिसिप्लिन बन गया है। फिलॉसफी एक बहुत ऑर्गनाइज़्ड डिसिप्लिन बन गया है। 20वीं सदी के ज्यादातर समय में एनालिटिक फिलॉसफी एक मुख्य स्कूल बन गया। सदी के पहले आधे हिस्से में, यह एक जुड़ा हुआ स्कूल था जो लॉजिकल पॉजिटिविज़्म से मज़बूती से बना था, इस सोच से एकजुट था कि फिलॉसॉफिकल समस्याओं को लॉजिकल पॉजिटिविज़्म से मज़बूती से बनाया जा सकता है और बनाया जाना चाहिए। बर्ट्रैंड रसेल का शुरुआती काम एनालिटिक फिलॉसफी के डेवलपमेंट का एक मॉडल था, जो 19वीं सदी के आखिर में ब्रिटिश फिलॉसफी में हावी आइडियलिज़्म को खारिज करने से लेकर मॉडर्न मैथमेटिकल लॉजिक के कॉन्सेप्चुअल रिसोर्स पर मज़बूती से आधारित नियो-ह्यूमन एम्पिरिसिज़्म तक गया।

## • मॉडर्निज़्म

मॉडर्निज़्म की सबसे बड़ी परिभाषा में मॉडर्न सोच, कैरेक्टर या प्रैक्टिस है। खास तौर पर यह शब्द आर्ट्स में मॉडर्निस्ट मूवमेंट, इसके कल्चरल ट्रेंड्स और उससे जुड़े कल्चरल मूवमेंट्स के बारे में बताता है। असल में 20वीं सदी के आखिर में पश्चिमी समाज में बड़े पैमाने पर और दूर तक असर डालने वाले बदलावों से पैदा हुए, खासकर मॉडर्न इंडस्ट्रियल समाजों का विकास और पहले विश्व युद्ध के बाद शहरों का तेज़ी से बढ़ना, उन वजहों में से थे जिन्होंने मॉडर्निज़्म को आकार दिया। मॉडर्निज़्म को सोच का एक सामाजिक रूप से आगे बढ़ने वाला ट्रेंड कहा जा सकता है जो प्रैक्टिकल एक्सपेरिमेंट, साइंटिफिक ज्ञान या टेक्नोलॉजी की मदद से अपने माहौल को बनाने, सुधारने और नया आकार देने की इंसान की ताकत को मानता है। इस नज़रिए से मॉडर्निज़्म ने ज़िद के हर पहलू की फिर से जांच करने को बढ़ावा दिया। दूसरी ओर, मॉडर्निज़्म को एक एस्थेटिक इंटीस्पेक्शन के तौर पर समझा गया है। [5]

### 3. शिक्षा दर्शन की अवधारणा

फिलॉसफी का मतलब है ज्ञान के प्रति तारीफ़। अपने शुरुआती स्टेज में यह जानकारी पाने का एक तरीका है। अगले फेज़ में यह ज्ञान पाने से जुड़ा है और अपने सबसे ऊंचे लेवल पर यह ज्ञान की ओर जाने वाला रास्ता है। फिलॉसफी के बारे में यही आम सोच है। दूसरी ओर, एजुकेशन ग्रोथ, डेवलपमेंट और सीखने का एक प्रोसेस है। यह एक मंज़िल तक पहुंचने का प्रोसेस है। और यह मंज़िल आइडिया से बनती है। और ये आइडिया फिलॉसफी वाले होते हैं। इसलिए एजुकेशन और फिलॉसफी दोनों का एक-दूसरे पर निर्भर रिश्ता है क्योंकि एजुकेशन ही वह तरीका है जिससे ज़िंदगी के लक्ष्य, जो असल में फिलॉसफी वाले होते हैं, हासिल किए जाते हैं। जॉन डेवी ने अपनी क्लासिक किताब डेमोक्रेसी एंड एजुकेशन (1916) के पहले चैप्टर में समझाया कि अपने सबसे बड़े मतलब में एजुकेशन ज़िंदगी की सोशल कंटिन्यूटी का तरीका है। डेवी ने बताया कि एक सोशल ग्रुप के हर एक मेंबर के जन्म और मौत की ज़रूरी बातें एजुकेशन को एक ज़रूरत बनाती हैं, क्योंकि इस बायोलॉजिकल ज़रूरी होने के बावजूद "ग्रुप की ज़िंदगी चलती रहती है"। एजुकेशन की बड़ी सोशल इंपॉर्टेंस इस बात से भी पता चलती है कि जब कोई समाज किसी संकट से हिल जाता है, तो इसे अक्सर एजुकेशनल ब्रेकडाउन का संकेत माना जाता है; एजुकेशन और टीचर बलि का बकरा बन जाते हैं। [6]

### 4. पूर्व आधुनिकतावाद, आधुनिकतावाद और उत्तर आधुनिकतावाद का अवलोकन

प्री-मॉडर्निज़्म, मॉडर्निज़्म और पोस्ट-मॉडर्निज़्म को समझने के लिए सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि इन शब्दों का इस्तेमाल कैसे किया जाता है। इनमें से हर एक के बारे में समय के दौर और

फिलोसोफिकल सिस्टम के तौर पर बात की जा सकती है। जब इन्हें फिलोसोफिकल युग के तौर पर देखा जाता है, तो इन्हें 'इज़्म' मानना सही है, इस मायने में कि हर युग में कई अलग-अलग तरीके थे।

- **प्री-मॉडर्निज़्म (1600-1650 का दशक)**

प्री-मॉडर्न समय की मुख्य ज्ञान-मीमांसा भरोसेमंद सोर्स से मिले ज्ञान पर आधारित थी। प्री-मॉडर्न समय में यह माना जाता था कि आखिरी सच को जाना जा सकता है और इस ज्ञान का रास्ता सीधे क्रांति से है। यह माना जाता था कि यह सीधा क्रांति भगवान से आती है। चर्च, जो बताए गए ज्ञान के मालिक और व्याख्याकार थे, प्री-मॉडर्न समय में मुख्य अथॉरिटी सोर्स थे।

- **मॉडर्निज़्म (1650-2950 का दशक)**

मॉडर्न समय में जानने के दो नए तरीके हावी हो गए। पहला था अनुभव (इंद्रियों से जानना) जो धीरे-धीरे मॉडर्निस्ट मेथोडोलॉजी के विकास के साथ साइंटिफिक एम्पिरिसिज़्म या मॉडर्न साइंस बन गया। इस समय का दूसरा ज्ञान-मीमांसा वाला तरीका तर्क या लॉजिक था। अक्सर विज्ञान और तर्क मिलकर या एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते थे।

- **आधुनिकतावाद का इतिहास**

मॉडर्निज़्म, आर्ट और आर्किटेक्चर, म्यूज़िक, लिटरेचर और अप्लाइड आर्ट्स में सुधार लाने वाले कल्चरल मूवमेंट्स की एक सीरीज़ को बताता है जो 1914 से तीन दशक पहले सामने आए थे। मॉडर्निज़्म में उन विचारकों के काम शामिल हैं जिन्होंने उन्नीसवीं सदी की एकेडमिक परंपराओं के खिलाफ बगावत की, उनका मानना था कि आर्ट, आर्किटेक्चर, लिटरेचर, धार्मिक विश्वास, सोशल ऑर्गनाइज़ेशन और रोज़मर्रा की ज़िंदगी के पारंपरिक रूप पुराने हो रहे थे। उन्होंने एक उभरती हुई पूरी तरह से इंडस्ट्रियलाइज़्ड दुनिया के नए इकोनॉमिक, सोशल और पॉलिटिकल पहलुओं का सीधे सामना किया। [7]

इस प्रोसेस को दो विचारकों ने और सपोर्ट किया, यानी बायोलॉजी में चार्ल्स डार्विन, सोशल साइंस में कार्ल मार्क्स। नेचुरल सिलेक्शन से एवोल्यूशन की डार्विन की थ्योरी ने आम जनता की धार्मिक निश्चितता को कमज़ोर कर दिया। यह विचार कि इंसान "छोटे जानवरों" की तरह ही उन्हीं इंपल्स से चलते हैं, एक बेहतरीन स्पिरिचुअलिटी के विचार के साथ मेल खाना मुश्किल साबित हुआ। कार्ल मार्क्स उसी प्रपोज़िशन का एक पॉलिटिकल वर्शन पेश करते दिखे कि इकोनॉमिक ऑर्डर की समस्याएं कुछ समय के लिए नहीं थीं, खास गलत कामों या कुछ समय के हालात का नतीजा नहीं थीं, बल्कि "कैपिटेटिस्ट" सिस्टम के अंदर असल में कॉन्ट्राडिक्शन में नहीं थीं।

## • सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन

इस समय में कई सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ताकतें काम कर रही थीं, जो पूरी तरह से अलग तरह की कला और सोच के लिए बहस का आधार बनीं। इंडस्ट्रियल शहरीकरण अपने साथ कई समस्याएं और लोगों के जीने के तरीकों में बदलाव लेकर आया। टेलीग्राफ के आविष्कार से, जिससे दूर से तुरंत बातचीत हो सकती थी, समय का अनुभव ही बदल गया।

1910 - 1930 में पहले विश्व युद्ध से पहले मॉडर्निज़्म के विस्फोट ने सामाजिक व्यवस्था के साथ बढ़ते तनाव और बेचैनी को जन्म दिया, जो हर माध्यम में कलात्मक कामों में दिखाई दिया, जिसने पहले के तरीकों को पूरी तरह से आसान बना दिया या उन्हें खारिज कर दिया। इन विकासों ने 'मॉडर्निज़्म' कहे जाने वाले काम को एक नया मतलब देना शुरू कर दिया। [8]

इसने साहित्य और कला में साधारण यथार्थवाद को खारिज करते हुए या उससे आगे बढ़ते हुए, व्यवधान को अपनाया। पहला विश्व युद्ध और उसके बाद की घटनाएं ऐसी बड़ी उथल-पुथल थीं जिन्होंने मॉडर्निज़्म को काफी हद तक आकार दिया। पहला, पहले की स्थिति की विफलता, दूसरा, मशीन युग के जन्म ने जीवन की स्थितियों को बदल दिया - मशीनीकृत युद्ध ने बड़े पैमाने पर चोटों, बड़ी संख्या में मौतों आदि से निपटने के लिए नई भयावहता पैदा की। अंत में अनुभव की अत्यधिक दर्दनाक प्रकृति ने बुनियादी धारणाओं को तोड़ दिया। इसके अलावा, यह विचार कि मानव जाति धीमी और स्थिर नैतिक प्रगति कर रही थी, महान युद्ध के मूर्खतापूर्ण नरसंहार के सामने हास्यास्पद लगने लगा। 1930 तक, आधुनिकता लोकप्रिय संस्कृति में प्रवेश कर चुकी थी।

## • भाषा का इस्तेमाल

भाषा को अब ट्रांसपेरेंट नहीं माना जाता, बल्कि इसे एक कॉम्प्लेक्स माना जाता है और इसके कई मतलब हमारी असलियत की कई कॉम्प्लेक्स समझ के लिए ज़रूरी हैं।

एनलाइटनमेंट शब्द का मतलब है 1600 के दशक में कई पढ़े-लिखे यूरोपियन लोगों के नज़रिए में बदलाव। नए नज़रिए ने इंसानी तरक्की की चाबी के तौर पर तर्क पर बहुत भरोसा किया। 1700 के दशक में यह सोच यूरोप में आम हो गई। एनलाइटनमेंट के विचारक गैलीलियो और न्यूटन जैसे साइंटिस्ट के उदाहरण से प्रेरित थे। साइंटिस्ट ने फिजिकल दुनिया को समझने के लिए ऑब्ज़र्वेशन और लॉजिक का इस्तेमाल किया। उनके तरीके पुरानी मान्यताओं को तेज़ी से बदल रहे थे। अब विचारक इंसानी ज़िंदगी की समस्याओं के लिए भी ऐसा ही तरीका अपनाना चाहते थे। इंसानी ज़िंदगी की समस्याओं को

हल करने के लिए भी ऐसा ही तरीका अपनाया गया। उस ज़माने के विचारकों और समाज सुधारकों ने यह बताया कि तर्क का एक नया ज़माना शुरू हो रहा है। इस नए ज़माने में सरकार और सामाजिक संस्थाएँ पहले के समय की "गलतियों और "अंधविश्वासों" पर नहीं, बल्कि तर्क की समझ पर आधारित होंगी। [9]

- **पोस्टमॉडर्निज़्म (1950 के दशक से आज तक)**

पोस्टमॉडर्निज़्म अपने साथ जानने के पिछले तरीकों पर सवाल उठाने लगा। जानने के लिए एक ही तरीके पर निर्भर रहने के बजाय, वे एक एपिस्टेमोलॉजिकल प्लूरलिज़्म की वकालत करते हैं जो जानने के कई तरीकों का इस्तेमाल करता है। इसमें प्री-मॉडर्न तरीके (रेवेलेशन) और मॉडर्न तरीके (साइंस और रीज़न) के साथ-साथ जानने के कई दूसरे तरीके जैसे इंटर्युशनल, रिलेशनल और स्पिरिचुअल शामिल हो सकते हैं। पोस्टमॉडर्न तरीके पिछले अथॉरिटी सोर्स और पावर को डीकंस्ट्रक्ट करने की कोशिश करते हैं। क्योंकि पावर पर भरोसा नहीं किया जाता, इसलिए वे एक कम हायरार्किकल तरीका अपनाने की कोशिश करते हैं जिसमें अथॉरिटी सोर्स ज़्यादा फैले हुए हों।

- **पोस्टमॉडर्निज़्म का मतलब**

पोस्टमॉडर्निज़्म एक शब्द के तौर पर 1970 के दशक में आर्किटेक्चरल सर्कल में उभरा, लेकिन जीन के पब्लिकेशन के बाद ही पॉपुलर हुआ। फ्रेंकोइस ल्योटार्ड की 'द पोस्ट मॉडर्न कंडीशन, ए रिपोर्ट ऑन नॉलेज इन इंग्लिश इन 1984'। उन्होंने पोस्टमॉडर्निज़्म को मेटा-नैरेटिव्स के प्रति अविश्वास के रूप में डिफाइन किया। वह खास तौर पर साइंस के मेटा-नैरेटिव्स की बात कर रहे हैं, जो इतने स्पेशलाइज़्ड और बिखरे हुए हो गए हैं कि वे एक साथ बात नहीं कर सकते। कैपिटलिज़्म की जीत और एफिशिएंसी पर ज़ोर देने की वजह से, मैनेजमेंट सच से ज़्यादा ज़रूरी है, कंप्यूटराइज़ेशन के असर की वजह से, परफॉर्मेंस वैल्यू से ज़्यादा ज़रूरी है। कम्युनिज़्म के खत्म होने से पोस्ट-मॉडर्निस्ट लोगों के मेटा-नैरेटिव्स को नकारने को और मज़बूत किया गया है, क्योंकि मार्क्सिज़्म ने दावा किया था कि यह एक मोनोलिथिक सिस्टम है जो सब कुछ समझाता है। पोस्ट-मॉडर्निस्ट इस बात से इनकार करते हैं कि मेटा-नैरेटिव जैसी कोई चीज़ हो सकती है - एक बड़ी कहानी जो दुनिया को जैसा हम जानते हैं, उसकी पूरी जानकारी दे सकती है। [10]

## • भाषा का विघटन

रोलांड बार्थेस (1915-1980), मिशेल फूको (1926 - 1984) और जैक्स डेरिडा की रचनाओं का बहुत दूर तक असर हुआ है। उनके विचार का सार यह है कि इंसान की भाषा, चाहे बोली जाए या लिखी जाए, किसी ऑब्जेक्टिव दुनिया को नहीं दिखाती, बल्कि यह भाषा के संकेतों का एक सिस्टम है जो खुद को ही दिखाता है। किसी की अपनी व्याख्या से परे कोई ऑब्जेक्टिव दुनिया नहीं है। शब्द सिर्फ दूसरे शब्दों को दिखाते हैं। मतलब खुद हमेशा के लिए टाला जाता है।

बार्थेस के अनुसार, ऑब्जेक्टिव दुनिया की बात करना असल में बुर्जुआ लोगों द्वारा मैनिपुलेशन से सत्ता बनाए रखने की कोशिश है। डेरिडा के लिए, किसी टेक्स्ट का खुद से बाहर कोई रेफरेंस पॉइंट नहीं होता। फिक्स्ड मतलब 'मेटाफ़र्स की एक चलती-फिरती सेना' से बनते हैं। डीकंस्ट्रक्शन के सबसे मज़बूत रूप में, न सिर्फ़ सारा मतलब टेक्स्ट के बजाय जानने वाले से पूरी तरह जुड़ जाता है, बल्कि शब्दों का भी दूसरे शब्दों के अलावा कोई रेफरेंट नहीं होता और आयरनी और एम्बिगुइटी पर ज़ोर देने पर भी, टेक्स्ट का सीधा मतलब खुद को ही बदल देता है। भाषा, मामले के नेचर के हिसाब से, ऑब्जेक्टिव रियलिटी को रेफर नहीं कर सकती। डेरिडा को डीकंस्ट्रक्शन की थ्योरी डेवलप करने का क्रेडिट दिया जाता है। [11]

## 5. भारतीय संदर्भ में शिक्षा दर्शन की स्थिति

शेषाद्रि के अनुसार, भारत में एजुकेशन की फिलॉसफी का इस्तेमाल आम तौर पर दो अलग-अलग पहलुओं में किया जाता है। एक है, जनरल फिलॉसफी के स्पेक्युलेटिव थीसिस (मेटाफिजिकल, एपिस्टेमोलॉजिकल और एक्सियोलॉजिकल) के इस्तेमाल के लिए लक्ष्य, करिकुलम, मेथोडोलॉजी या अगर साफ तौर पर न बताया जाए तो, तय करना और एजुकेशनल थ्योरी और प्रैक्टिस के लिए मतलब निकालना। फिलॉसफी का फील्ड अलग-अलग विचारकों, सिस्टम, स्कूल वगैरह की स्टडी के एरिया तक ही सीमित था। इस रोक लगाने वाले तरीके ने इस फील्ड की ग्रोथ के लिए बुरा हाल कर दिया है। एनालिटिकल मूवमेंट का इस स्टडी एरिया पर बहुत कम या कोई असर नहीं पड़ा।

भारत में एजुकेशन की फिलॉसफी एक बुरी हालत पेश करती है - एकेडमिक स्टडी के सब्जेक्ट के तौर पर, टीचर एजुकेशन प्रोग्राम में एक बेसिक इनपुट के तौर पर, स्कॉलरली रिसर्च के एरिया के तौर पर और इंटेलेक्चुअल बातचीत और बहस के नजरिए के तौर पर, सभी पहलुओं में इसे नजरअंदाज किया गया है (शेषाद्रि, 2008)। इसका एक कारण खराब क्वालिटी के इनपुट - स्टूडेंट, टीचर और करिकुलम और हायर लर्निंग इंस्टीट्यूशन में ज्यादातर लिबरल और ह्यूमैनिस्टिक स्टडी का सामना करने वाली

मार्केट फोर्स का असर है। शेषाद्रि आगे कहते हैं कि 'इज़म' के दायरे में लोगों और इंस्टीट्यूशन के एजुकेशनल आइडिया की स्टडी के तौर पर एजुकेशन की फिलॉसफी की पहले से बनी सोच ने इस फील्ड को एक स्थिर और अलग-थलग एरिया बना दिया है। इसके उलट, पश्चिम में एजुकेशन की फिलॉसफी का फील्ड एजुकेशनल मकसद, पॉलिसी, करिकुलम, पेडागॉजी टेस्टिंग, मेज़रमेंट, एडमिनिस्ट्रेशन, एक्सेस, इक्विटी, एंटी-रेसिस्ट एजुकेशन, स्वदेशी ज्ञान और कल्चर, डेमोक्रेसी, सिटिज़नशिप और मटर जैसी मौजूदा बहसों में लगातार शामिल रहने के कारण एक्टिव रहा है। फिलॉसफी मुख्य रूप से अंदाज़े के बजाय ऑब्ज़र्वेशनल तरीकों से मूल्यों और असलियत को आम तौर पर समझने की खोज है। यह जीवित प्राणियों में खुद को और जिस दुनिया में वे रहते हैं, उसे जानने की एक नैचुरल टेंडेंसी को दिखाता है। [12]

उदाहरण के लिए, पश्चिमी फिलॉसफी, फिलॉसफी के एटिमोलॉजिकल मतलब के प्रति कमोबेश सच्ची रही। दूसरी ओर, हिंदू फिलॉसफी बहुत ज़्यादा स्पिरिचुअल है और इसने हमेशा सच को प्रैक्टिकल तरीके से समझने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। फिलॉसफी इंसानी स्वभाव और जिस असलियत में हम रहते हैं, उसके स्वभाव के बारे में विचारों का एक बड़ा सिस्टम है क्योंकि यह बुनियादी और बड़े मुद्दों को एड्रेस करता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि इंसानी ज़िंदगी के सभी पहलू फिलोसोफिकल सोच से प्रभावित और कंट्रोल होते हैं। फिलोसोफी को बाकी सभी साइंस की शुरुआत करने वाला माना जाता है। यह बाकी सभी सब्जेक्ट्स के लिए नॉलेज बेस देता है।

दूसरी तरफ, एजुकेशन भी इंसानी ज़िंदगी से बहुत करीब से जुड़ी हुई है। फिलोसोफी के अलग-अलग पहलू जैसे पॉलिटिकल, सोशल और इकोनॉमिक ने एजुकेशन के अलग-अलग हिस्सों जैसे एजुकेशनल प्रोसीजर, प्रोसेस, पॉलिसी, प्लानिंग और एजुकेशन के अलग-अलग एरिया में उन्हें लागू करने पर बहुत असर डाला है। वर्ल्ड फिलोसोफी का मतलब हमेशा से ज्ञान से प्यार रहा है। इतिहास के शुरुआती समय से ही यूनिवर्स से जुड़े रहस्य को सामने लाने की कोशिश की गई है, जैसे कि आखिरी सच का पता लगाना। यह फिलोसोफी के विकास के लिए एक कभी न बदलने वाला सफर है। [13]

## 6. निष्कर्ष

भारत में एजुकेशनल फिलॉसफी पुरानी आध्यात्मिक समझ, क्लासिकल तर्क और मॉडर्न इंटेलेक्चुअल मूवमेंट का एक शानदार मेल है। यह रिव्यू दिखाता है कि जहां भारतीय फिलॉसफी की परंपराओं ने हमेशा नैतिक विकास, खुद को समझने और पूरी तरह से सीखने पर ज़ोर दिया है, वहीं पश्चिमी मॉडर्निज़्म और पोस्ट-मॉडर्निज़्म के असर ने ज्ञान, तरीकों, अधिकार और एजुकेशनल लक्ष्यों पर नई बहसें शुरू

की हैं। अपनी गहरी जड़ों के बावजूद, भारत में एजुकेशनल फिलॉसफी का क्षेत्र अभी भी कम विकसित है और अक्सर एकेडमिक संस्थानों में इसे नज़रअंदाज़ किया जाता है। नतीजे मज़बूत एनालिटिकल तरीकों, रिसर्च की ओर झुकाव और फिलॉसफी की सोच को करिकुलम सुधार, बराबरी, सांस्कृतिक समझ और डेमोक्रेटिक नागरिकता जैसी प्रैक्टिकल एजुकेशनल चिंताओं के साथ जोड़ने की ज़रूरत पर ज़ोर देते हैं। भारतीय एजुकेशन सिस्टम की आज की चुनौतियों से निपटने के लिए एजुकेशनल फिलॉसफी को एक डायनामिक क्षेत्र के तौर पर फिर से ज़िंदा करना ज़रूरी है। देसी ज्ञान और मॉडर्न थ्योरेटिकल नज़रिए का एक संतुलित मेल भारत को ज़्यादा मतलब वाला, सबको साथ लेकर चलने वाला और आगे की सोच वाला एजुकेशनल फ्रेमवर्क बनाने में मदद कर सकता है।

---

## संदर्भ

1. कान, स्टीवन एम. (2023). एजुकेशन की फिलॉसफी में क्लासिक और कंटेंट वाली रीडिंग। न्यूयॉर्क, NY: मैकग्रा हिल।
2. बनर्जी, ए. के., और माही एम. (2015). स्वामी विवेकानंद की एजुकेशनल फिलॉसफी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 4(3), 030-035.
3. भाटिया, के. (2020). एजुकेशन की फिलॉसफी और सोशियोलॉजिकल नींव।
4. भट्टाचार्जी, एस. (2024). पोस्टमॉडर्न युग में टैगोर की एजुकेशन की फिलॉसफी की प्रासंगिकता- एक कॉन्सेप्चुअल एनालिसिस। OSR जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (IOSR-JHSS) वॉल्यूम, 19, 34-40.
5. चक्रवर्ती, एम. (2021). एजुकेशन की फिलॉसफी में पायनियर्स। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी। डुपुइस, ए. एम., और गॉर्डन,
6. आर. एल. (2020). हिस्टोरिकल नज़रिए से एजुकेशन की फिलॉसफी। यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ़ अमेरिका। ग्रिफ़िथ्स,
7. एम. (2024). एजुकेशनल पॉलिसी बनाने के लिए एजुकेशन की फिलॉसफी की ज़रूरत पर फिर से सोचना। एजुकेशनल फिलॉसफी और थ्योरी, 46(5), 546-559.
8. हेडन, एम. जे. (2022). एजुकेशन के फिलॉसफर क्या करते हैं? एजुकेशन जर्नल्स की फिलॉसफी की एक एंपिरिकल स्टडी। स्टडीज़ इन फिलॉसफी एंड एजुकेशन, 31(1), 1-27.

9. कुमारा, एस. के. (2016). एजुकेशन की फिलॉसफी का मतलब, स्कोप और काम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशल एंड इकोनॉमिक रिसर्च, 6(4), 150-157.
10. सहान, एच. एच., और टेरज़ी, ए. आर. (2015). होने वाले टीचरों की एजुकेशनल फिलॉसफी और उनके सिखाने-सीखने के तरीकों के बीच संबंधों का एनालिसिस। एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज़, 10(8), 1267-1275.
11. शेषाद्रि, सी. (2018). नॉलेज फील्ड के तौर पर एजुकेशन की फिलॉसफी। नई दिल्ली: नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन।
12. शर्मा, जी. आर. (2023). कंटेम्पररी इंडियन फिलॉसफी ऑफ़ एजुकेशन में ट्रेंड्स एक क्रिटिकल इवैल्यूएशन। अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिक्ट। विश्वनाथन,
13. जी. (2019). मास्क्स ऑफ़ कॉन्केस्ट। न्यूयॉर्क: कोलंबिया उत्तर प्रदेश.